|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 27. April 2025 | | | |
| **2. Sonntag der Osterzeit C** | | Sonntag der göttlichen Barmherzigkeit | |
| Weißer Sonntag | | | |
| Erste Lesung: Apg 5, 12-16; Zweite Lesung: Off 1, 9-11a.12-13.17-19; Evangelium: Joh 20, 19-31 | | | |
|  |  | |  |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 329 | | Das ist der Tag |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 155 | | Kyrie |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 758 | | Lobsing, erlöste Christenschar |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Ps 118, 2 u. 4. 24-15. 22-24 u. 28 | |  |
|  | Kehrvers: GL 444 | | Danket dem Herrn |
|  | GL 326, 1+2 | | Wir wollen alle fröhlich sein |
|  |  | |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 | |  |
|  | Vers: | |  |
|  | *So spricht der Herr:* | |  |
|  | *Weil du mich gesehen hast, Thomas, glaubst du.* | | |
|  | *Selig sind, die nicht sehen und doch glauben.* | | |
|  |  | |  |
| Credo: | GL 759 | | Der Glaube ist nun fest |
|  | GL 760 / 761 | | Wahrer Gott |
|  |  | |  |
| Gabenbereitung: | GL 322, 7-11 | | Den Jüngern war das Herz |
|  | GL 337, 1+3+4+7 | | Freu dich, erlöste Christenheit |
|  |  | |  |
| Sanctus: | GL 708 | | Heilig |
|  |  | |  |
| Agnus Dei: | GL 497, 1+4! | | Gottheit, tief verborgen |
|  |  | |  |
| Danksagung: | GL 331, 1+2+4! +6 | | Ist das der Leib |
|  |  | |  |
| Schluss: | GL 525, 1-4 | | Freu dich, du Himmelskönigin |